"जो शख़्स वज़ीफ़े पढ़े और नमाज़ न पढ़े वो फ़ासिक़ ओ फ़ाजिर और सख्त गुनहगार है उसका वज़ीफ़ा उसके, मुँह पर मार दिया जायेगा " (फतावा रज़विया)

"सहाबा किराम नमाज़ के तर्क को कुफ्र का अमल समझा करते थे " (मिश्कात)
"गौस ए आज़म रदिअल्लाह अन्हु फरमाते हैं बेनमाज़ी को मुसलमानो के कब्रिस्तान में दफ़न मत करो "
"हज़रत सुल्तान ए बाहू रदिअल्लाह अन्हु फरमाते हैं की बेनमाज़ी से ख़िन्ज़ीर भी पनाह माँगता है"

नमाज़ पर अल्लाह का इनाम

जिसने 5 नमाज़ो की हिफाज़त की तो अल्लाह तआला उसे 5 इनाम अता फरमाएगा

01- उससे रिज़्क़ की तंगी दूर फरमाएगा
02 - अज़ाब ए क़ब्र से दूर फरमाएगा
03-अल्लाह उसे आमाल नामा सीधे हाथ में अता फरमाएगा
04- पुल सिरात से बिजली की तरह तेज़ गुज़रेगा
05 -बगैर हिसाब के जन्नत में दाखिल होगा (मुकाशिफतुल कूलूब)

जरा गौर करो

"जब तक फ़र्ज़ ज़िम्मे पर बाक़ी रहता है कोई नफ़्ल क़ुबूल नहीं होता"(अल मलफ़ूज़)
इसलिए पहले अपनी क़ज़ा नमाज़ों को पूरा करे अगर कभी कोई नमाज़ क़ज़ा हो जाये या वक़्त निकल जाये तो उसे जल्द से जल्द अदा कर लें अगर आप इस बात पर अमल करेंगे तो आपके दिल में नमाज़ की अहमियत बाकी रहेगी
हदीस ए पाक में है **"जो अपनी किसी वक़्त की नमाज़ को भूल जाये या उसके वक़्त में सोता रह जाये और याद आने पर पढ़ ले यही उसका कफ़्फ़ारा है"** (बुखारी)

"जो लोग नफ़सानियत की बजह से इमाम के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ते और जमाअत होती रहे और शामिल न हो वो लोग सख्त गुनाहगार हैं" (फतावा रज़विया)

"जिसकी नमाज़ उसको बेहयाई और बुरी बातों से न रोके वो नमाज़ ही नहीं"
अल्लाह तआला से दुआ करते रहे के या अल्लाह मुझको नमाज़ का पाबंद बना दे क्यूंकि सब कुछ उसकी तरफ से और उसी की तौफ़ीक़ से है और दीनदार बन जाना कमाल नहीं बल्कि मरते दम तक दीनदार बने रहना कमाल है इसलिए हम अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करते हैं के अल्लाह हम सब को पांचो वक़्त की नमाज़ बाजमाअत अदा करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए|

मिनजानिब -मस्जिद क़लन्दर शाह , श्यामतगंज बरैली शरीफ

जन्नत की कुंजी नमाज़ है(तिरमीज़ी)

नमाज़

पढ़ो इस से पहले के तुम्हारी नमाज़ पढ़ी जाये

नाशिर

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

tehreeknizamemustafa@gmail.com

इस्लाम अल्लाह तआला के उन अहकाम का नाम है जो अल्लाह तआला ने अपने हबीब ए पाक ﷺ के ज़रिये अपने बन्दों तक पहुचाये इस्लाम की बुनियाद पाँच अरकान पर है उन में ईमान के बाद नमाज़ सबसे अहम रुक्न है लिहाज़ा हर मुस्लमान आकिल बालिग़ मर्द और औरत पर दिन रात में पाँच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है|
पाँचों वक़्त की नमाज़ की पाबन्दी इस्लाम में कितनी ज़रूरी है इसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता और बस समझ लीजिये की बेनमाज़ी सिर्फ नाम का मुसलमान है जैसे बेरूह का जिस्म|

अल्लाह तआला क़ुरान ए मजीद में इरशाद फरमाता है|

"बेशक नमाज़ मुसलमानो पर वक़्त बाँधा हुआ फ़र्ज़ है " (सूरेह निसा #103)
"बेशक नमाज़ मना करती है बेहयाई और बुरी बात से " (सूरेह अनकाबूत #45)

नमाज़ की अहमियत

आइये हदीस ए पाक की रौशनी में नमाज़ की अहमियत जानते है;

हदीस 01: हज़रात अब्दुल्लाह इबने मसऊद रदिअल्लाह अन्हु ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह ﷺ! अल्लाह तआला को अपने बन्दे का कौन सा अमल सबसे ज़्यादा महबूब है आक़ा ने इरशाद फ़रमाया बन्दे का नमाज़ को उसके वक़्त पर अदा करना (बुखारी)

हदीस 02: अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया मेरी नज़दीक सारी रात जागकर इबादत करने से फज्र की जमाअत में शरीक होना बेहतर है (मिश्कात)

हदीस 03: आक़ा करीम ने फ़रमाया मेरे आँखों की ठंडक नमाज़ में रखी गयी है
(सुनन निसाई)

हदीस 04: आक़ा करीम ﷺ ने फ़रमाया क़यामत के दिन सबसे पहले नमाज़ का हिसाब लिया जायेगा अगर नमाज़ अच्छी हुई तो बाकी आमाल भी अच्छे होंगे और नमाज़ ख़राब हुई तो बाकी आमाल भी ख़राब होंगे (तबरानी)

हदीस 05: जो शख्स सुबह सवेरे नमाज़ की तरफ गया तो वो ईमान का झंडा लेकर गया और जो शख्स सुबह सवेरे बाज़ार की तरफ गया वो शैतान का झंडा लेकर गया (इबने माजा)

नोट:जब तुम्हारे बचे 7 साल के हो जाये तो उनको नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो और जब 10 साल के हो जाये तो उनको मार कर नमाज़ पढ़वाओ| (अबू दाऊद)

हज़रत सय्यदना उमर फ़ारूक़ ए आज़म रदिअल्लाह अन्हु ने अपने खिलाफत और हुकूमत के ज़माने में अपने गवर्नरो को लिख कर भेजा था **"तुम्हारे सब कामों में मेरे नज़दीक नमाज़ की अहमियत है तो तुम में से जिसने नमाज़ो की पाबन्दी की उसने पूरे दीं की हिफाज़त कर ली और जिसने नमाज़ो की पाबन्दी न की तो वो और कामों को भी बर्बाद कर लेगा"|** (मिश्कात)

नमाज़ में कितनी शर्तें हैं ?

नमाज़ को अदा करने के लिए इन 06 शर्तों का पूरा होना ज़रूरी है;

01 - तहारत (बदन, कपड़ों और जगह का पाक होना)
02 -सतर ए औरत (नाफ से घुटनो तक बदन का छिपा होना)
03 -वक़्त
04 -नियत
05 - इस्तेकबाल ए क़िब्ला (काबा शरीफ की तरफ रुख होना)
06 -तकबीर ए तहरीमा (लफ्ज़ ए अल्लाह हु अकबर का कहना)

नमाज़ में कितने फ़र्ज़ हैं ?

नमाज़ में 06 फ़र्ज़ हैं;

01 - क़याम (तकबीर ए तहरीमा के बाद नियत बाँध कर खड़ा होना)
02 - किरात (क़ुरआन का पढ़ना)
03 –रुकू
04 –सुजूद
05 -क़ायदा ए आखीरा (2 या 4 रकआत वाली नमाज़ में आखरी रकअत के बाद बैठना
06 -ख़ुरूज ए बिसनेही (नमाज़ से बाहर होने के लिए सलाम फेरना)

बेनमाज़ी की सज़ा

"अबू नुऐम रहमतुल्लाह अलेह से मरवी है के जिसने जान बूझकर नमाज़ छोड़ दी तो अल्लाह तआला उसका नाम जहन्नुम के उस दरवाज़े पर लिख देगा जिससे वो दाखिल होगा " (हुलयातुल औलिआ)

"जिसने जान बूझकर नमाज़ छोड़ दी उसने एलानिया कुफ्र किया " (तबरानी)
इमाम ए आज़म इस हदीस के मुताल्लिक़ फरमाते हैं के उसने काफिरों वाला काम किया।